RNI. MAHMUL02805/2010/33461

IMPACT FACTOR 6.20

ISSN 0976-0377

International Registered & Recognized

Research Journal Related to Higher Education for all Subjects

INTERLINK RESEARCH ANALYSIS

REFEREED & PEER REVIEWED RESEARCH JOURNAL

Issue : XXII, Vol. V
Year - 11 (Half Yearly)
(July 2020 To Dec. 2020)

Editorial Office :
'Gyandeep',
R-9/139/6-A-1,
Near Vishal School,
LIC Colony,
Pragati Nagar, Latur
Dist. Latur - 413531.
(Maharashtra), India.

Contact : 02382 - 241913
09423346913,09637935252,
09503814000,07276301000

Website
www.irasg.com

E-mail :
interlinkresearch@rediffmail.com
visiongroup1994@gmail.com
mbkamble2010@gmail.com
drkamblebg@rediffmail.com

Publisher :
Jyotichandra Publication,
Latur, Dist. Latur.-415331
(M.S.) India

Price: ₹ 200/-

CHIEF EDITOR

Dr. Balaji G. Kamble
Research Guide & Head, Dept. of Economics,
Dr. Babasaheb Ambedkar Mahavidyalaya, Latur, Dist. Latur (M.S.)
Mob. 09423346913, 9503814000

EXECUTIVE EDITORS

Dr. Aloka Parasher Sen
Professor, Dept. of History & Classics,
University of Alberta, Edmonton,
(CANADA).

Dr. Laxman Satya
Professor, Dept. of History,
Lokhevan University, Loheavan,
PENSULVIYA (USA)

Dr. Huen Yen
Dept. of Inter Cultural
International Relation
Central South University,
Changsha City, (CHAINA)

Bhujang R. Bobade
Director, Manuscript Dept.,
Deccan Archaeological and Cultural
Research Insititute,
Malakpet, Hyderabad. (A.P.)

Dr. Omshiva V. Ligade
Head, Dept. of History,
Shivjagruti College,
Nalegaon, Dist. Latur. (M.S.)

Dr. Sadanand H. Gone
Principal,
Ujwal Gramin Mahavidyalaya,
Ghonsi , Dist. Latur. (M.S.)

Dr. G.V. Menkudale
Dept. of Dairy Science,
Mahatma Basweshwar College,
Latur, Dist. Latur.(M.S.)

Dr. Balaji S. Bhure
Dept. of Hindi,
Shivjagruti College,
Nalegaon, Dist. Latur.(M.S.)

DEPUTY-EDITORS

Dr. S.D. Sindkhedkar
Vice Principal
PSGVP's Mandals College,
Shahada, Dist. Nandurbar (M.S.)

Veera Prasad
Dept. of Political Science,
S.K. University,
Anantpur, (A.P.)

Dr. C.J. Kadam
Head, Dept. of Physics
Maharashtra Mahavidhyalaya,
Nilanga, Dist. Latur.(M.S.)

Johrabhai B. Patel,
Dept. of Hindi,
S.P. Patel College,
Simaliya (Gujrat)

CO-EDITORS

Sandipan K. Gaike
Dept. of Sociology,
Vasant College,
Kej, Dist. Beed (M.S.)

Dr. Shivaji Vaidya
Dept. of Hindi,
B. Raghunath College,
Parbhani,Dist. Parbhani.(M.S.)

Ambuja N. Malkhedkar
Dept. of Hindi
Gulbarga, Dist. Gulbarga,
(Karnataka State)

Dr. Shivanand M. Giri
Dept. of Marathi,
B.K. Deshmukh College,
Chakur Dist. Latur.(M.S.)

RNI. MAHMUL02805/2010/33461
Interlink Research Analysis
IMPACT FACTOR 6.20
ISSN 0976-0377
Issue:XXII, Vol. V, July 2020 To Dec. 2020

INDEX

Sr. No.	Title of Research Paper	Author(s)	Page No.
1	The Role of National Human Rights Commission in India	Dr. Vitthal Gonsatwad	1
2	The Element of Indianness in Indian English Poetry	Sanjay L. Khandel	5
3	Eco Tourism:A Potential Tool for Sustainable Development	Avanti Sanjay Chaphale, Dr. (Mrs.) Vandana Dhawad	12
4	Consortia for Professionals and Academic Librarians	Gajanan D. Rewatkar	22
5	Stress Levels of Policemen with and without Sports Background: A Comparative study	Dr. Sandeep B. Satao	29
6	A Sociological Study of Socio-Medical Problems in Vidarbha	Dr. Ananda B. Kale	34
7	स्वातंत्र्योत्तर आदिवासी उपन्यासों में सांस्कृतिक चेतना	डॉ. महावीर रामजी हाके	38
8	कथेच्या आकृतिबंधाचे विश्लेषण	डॉ. राजेंद्र वडमारे	43
9	कबड्डी खेळाडु यांच्या विकासासाठी शारीरिक क्षमता व शारीरिक घटक यांचे महत्व	महेश आर. पाटील	53
10	राजकारणातील महिला नेतृत्वाचा चिकित्सक अभ्यास	डॉ. विनय एच. भटकर	57

RNI. MAHMUL02805/2010/33461
Interlink Research Analysis
IMPACT FACTOR 6.20
ISSN 0976-0377
Issue : XXII, Vol.V, July 2020 To Dec. 2020

स्वातंत्र्योत्तर आदिवासी उपन्यासों में सांस्कृतिक चेतना

डॉ. महावीर रामजी हाके
हिंदी विभाग,
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,
गंगाखेड, जि. परभणी

7 Research Paper - Hindi

संस्कृति और समाज :-

'संस्कृति' शब्द 'सम' उपसर्ग 'कृ' धातु और 'क्लिन' प्रत्यय से बना है 'संस्कृति' का अर्थ है..... वह दशा या अवस्था जिसका संस्कार या परिष्कार किया हो । भारतीय संस्कृति मानव को सांत से अनंत की ओर अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाती है । उसमें व्यापकता, विशालता, सहानुभूति और समन्वय की भावना है । जनम, मृत्यु, विवाह, संस्कार, भाषा साहित्य, संगी, काव्य, चित्रकला, मुर्तिकला, स्थापत्य कलाएँ आदि कलाएँ भोजन, वस्त्र, गृह एवं गृहोपकरण कृषी व्यवसाय, उद्योगधंदे, आवागमन के साधन, धर्म परायणता, दर्शन, विज्ञान, जन्म विवाह आदि से संबंधित संस्कार, शिक्षा, पारिवारिक संगठन, शासन व्यवस्था, सामाजिक व्यवस्था आदि से संबंधित संस्कार, नारी पुजा, वर्ण व्यवस्था, गौपूजा आदि भारतीय संस्कृति के मौलिक तत्व है । व्यवहार ज्ञान, विवेक, आदर्श की प्राप्ति की संस्कृति से संभव है । डॉ. मदन गोपाल संस्कृति के प्रति कहते है, "मानव जीवन की संपूर्ण गतिविधियों का संचालन अंत वृत्तियों की जिस समष्टि द्वारा होता है तथा जिसके अपनाने से वह सच्चे अर्थों में मनुष्य बनने की दिशा में अग्रेसर होता है, उसे संस्कृति कहते है ।"[१]

संस्कृति का अनेक रुपो में विभाजन हो सकता है किंतु मोटे तौर पर संस्कृति का इस प्रकार से विभाजन किया है :-

१) नागरीय संस्कृति ।
२) ग्रामीण संस्कृति ।

३) आदिम जातियों संस्कृति ।

४) घुमक्कड जातियों की संस्कृति आदि ।

समाज और संस्कृति का अटूट संबंध रहा है । संस्कृति समाज की संपत्ति होती है । जिससे मानव के आध्यात्मिक, शारीरिक, नैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा राजनैतिक जीवन का विकास और परिष्कार होकर जीवन संयमित और नियमित बनता है ।

आदिवासी लोगों की संस्कृति :-

आदिवासी सृष्टि की शुरुवात से इस पृथ्वी के वासी हैं । वे सभ्य दुनिया की चकाचौंध से दूर अब भी पहाडो और जंगलों को अपनास निवास बनाए हुअ है । प्रकृति से उनका यह रिश्ता उनकी समूची दिनचर्या और तमाम रस्मों-रिवाजों में प्रखरता से व्यक्त होता है । आदिवासियों का रहन-सहन उनका नृत्य, संगीत उनकी सामाजिक व्यवस्था, उनका अर्थतंत्र, उनकी संस्कृति सब विलक्षण और आकर्षित करने वाला है ।

प्राय: सभी जनजातियों के लोग सबसे पहले जन्मे स्त्री-पुरुष को अपना आदि पितर मानते है । प्राकृतिक वस्तुओं को वे अपने देव के वरदान की तरह ही स्वीकार करते है । आदिवासियों के गहने कई प्रकार के होते है । चांदी, कासा, पीतल, गिलट तथा तांबे से शरीर में पहनने के आकर्षक गहने बनाये जाते है । वन कन्याएँ भिन्न-भिन्न रंगो की मोतियों की मालाओं को बडे शौक से साथ धारण करती है । आदिवासी स्त्रियों अपने शरीर पर गुदने गुदवाती हैं । गोदे मे मोर, साकंत, पटनी बिछिया, मक्खी आदि चिन्ह गोंडो रहते है । ये अपने हाथ, पैर, सीना, पीठ और कुछ जन जातियों में चेहरों पर भी गुदना गुदवाते है ।

आदिवासीयों का आर्थिक जीवन उनकी भौगोलिक परिस्थिति पर निर्भर होता है । आसपास के जंगल और जमीन, पहाड पानी से जो मिल जाता है, ये काम चलाते हैं । आदिवासीयों में गाँव पंचायत का बहुत महत्व होता है । पंचायत का निर्णय सर्वोपरी मान्य होता है । आदिवासी अपने धर्म और आर्थिक विश्वासों के प्रति बहुत दृढ होता है ।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि संस्कृति और समाज का अटूट संबंध है । एक के बिना दूसरे की कल्पना नही की जा सकती ।

रीति-रिवाज और मान्यताएँ :-

भारतीय प्राचीन काल से ही रीति-रिवाज एवं मान्यताओं के प्रबल प्रवर्तक रहे हैं । ग्रामीण इलाकों में रहने वाले आदिम जाति के लोग भी इसका कट्टरता से पालन करते है । प्राचीन समय से चले आ रहे रीतिरिवाजों और मान्यताओं का सदियों से पालन होत आ रहा है । इन्ही रीति-रिवाज द्वारा जाति गत समाज की पहचान होती है । इस संदर्भ में डॉ. श्रीराम शर्मा का कथन उचित है, "रीति-रिवाज समाज के द्वारा निश्चित व्यवहार के नियम होते है जिन्हें परंपराओं के रुप में निभाया

जाता है । इन्ही रीति-रिवाजों द्वारा सामाजिक विरासत का संरक्षण हो पाता है । किसी स्थान के लोग जीवन की झलक भी वहाँ के रीति-रिवाजों से मिलती है ।"[२]

इससे स्पष्ट होता है कि रीति-रिवाज समाज के अनुशासक है, जिनका पालन करना व्यक्ति के लिए आवश्यक है । जो रीति-रिवाजों का उल्लंघन करता है और समाजिक दंड भोगने से इंकार कर देता है तो उसका सामाजिक बहिष्कार किया जाता है । आदिवासी भी अपने परम्परागत रीति-रिवाजों का इसी प्रकार पालन करते है । श्री श्याम ताहेड ने भील जनजाति की रीति-रिवाज एवं परंपराओं के विषय में लिखा है, "इनके रीति-रिवाज एवं त्योहार आखातीज से शुरु होते है । उसकी पूजा पद्धति में देवी-देवता पद्धती, पृथ्वी, जीव-जंतु, प्रकृति एवं जल को विशेष महतव दिया जाता है । ऋतुओं के आगमन के साथ साला माता की पूजा की जाती है ।"[३] आदिवासियों का देवी-देवता की पूजा करना, देवी-देवता के कोप से बचने के लिए पुशओंकी बलि देना, बीमार होने पर ओझा बाबाओं से झाड-फँक कवाना, मृत्यू होने पर देवताओं की पूजा करना, विवाह संबंधी उनके रीतिरिवाज और मान्यताओ को पालन करना आदि ।

पर्व, त्योहार, मेलों का चित्रण :-

भारतीय संस्कृति प्राचीन से आज तक विकसित, प्रचारित और प्रसारित रही है । इस संस्कृति में मनाये जानेवाले त्योहारों के अवसरों पर मस्तीका अक्षय स्त्रोत देह में फौवारे की तरह प्रवाहित होता है । त्योंहारो से आध्यात्मिक सरसता बलवत होती है । त्योहार के लिए सामान्यत: "पर्व शब्द का भी प्रयोग होता है । पर्व शब्द का संबंध शुभ मुहूर्तों, लग्नों तथा क्षणों के योग से है । मिलने के उन मुहूर्तों में अथवा संस्कृतियों में धर्म, पुण्य अथवा दान का विशेष महत्व माना गया है"[४] पर्वों, त्योहारों और मेलों से आदमी उत्साह तथा ऊर्जा पाता है ।

गोंड जनजाति में करम, चैती, नयाखाई, हरेली और छैला आदि पर्व प्रचलित है । इसी प्रकार मुंडाओं के आठ पर्व मागे, फागूर, सरहुल, हीनव, कीलमसिंग, बोगा सोहेराई, सोसाबोंगे और बडाणनी । आदिवासीयों की नारियाँ 'जनी शिकार' महापर्व मनाती है । दरअसल पर्व तो आदिवासी से इतर जातियाँ भी मनाती है । लेकिन गोंडों के करमा पर्व का एक उदाहरण दृष्टव्य है । इसमें गाया जाने वाला गीत-

"मिट्टी लइले साबुन लइले
मलमल काया धोई रे
अंत कपट का दाग छुप्या, धोबी
फिर फिर जाया रे
ओ मुरलीवारे सरना लिहाने
ओ किसना मुरलीवारे ।"[५]

इसे प्रस्तुति का जो ढंग है वह बिल्कुल अन्य पर्वों को माननेवाली प्रजातियों से भिन्न है ।

'जंगल के फूल' उपन्यास में कोरता पाण्डूम गोंड आदिवासियों का विशेष त्योहार है । दशहरा के आस-पास बोया गया धान या काला धन पकना शुरु होता है । गाँव के जिस व्यक्ति का धान पहले पकना शुरु होता है वह गाँव के गायता को इसकी सूचना देता है 'जंगल के आसपास' उपन्यास में यह तय किया गया है कि "एक मास बाद जो बसंत पंचमी का त्योहार आ रहा है । उसी पर इस बार करियाला पहरुआ गाँव में करवाया जाए और नई नाटिका भी उसी अवसर पर खेली जाए"[६] आदिवासी समाज में मेलों, पर्वें के आगमन से नई उम्मीद का निर्माण होता है साथ ही साथ आदिवासी संस्कृति की झलक भी मिलती है ।

लोकगीत, लोककथाएँ तथा गाथाएँ :-

लोकगीत :-

लोकगीतों की परंपरा बहुत पुरानी है, लोकगीत उतना ही पुराना है, जितना मानवी जीवन / आदिवासियोंकी परंपरा में लोकगीत के साथ-साथ लोकनृत्य, लोकवार्ताओं का बडा महत्व है । लोकगीतों के द्वारा आदिवासियों का उल्लास प्रकट होता है । अवस्थीजी 'जंगल के फूल' उपन्यास के प्रारंभ में गोंड आदिवासियों का लोकगीत प्रस्तूत करते हुए लिखते है "सु र्र र्र र्र र्र र्र र्र की भराई आवाज जंगली भैसों के सींगो के बाजे से निकली और ढोर के घर्राये सूरों के साथ मिलकर गाँव भर में फैल गई । रे रे रेलो रे रेलोरे, रेलो रेरेरे रेला रेए ए ए ।"[७]

आदिवासियों में सामुहिक नाच गाने का आयोजन भी होता है । जिसमे एक तरफ से औरते नाचने गाने लगती है । इस प्रकार कहा जा सकता है कि लोकगीत भारतीय संस्कृति का प्राण है।

लोक कथा :-

लोक कथा लोकसाहित्य की महत्वपुर्ण विधा है । लोककथा की कहानी विश्व व्याप्त है । भारत में लोकगाथा का स्त्रोत पुराना है । डॉ. दिलीप पटेल के शब्दों में, "संसार की उत्पत्ति के साथ साथ इनका जन्म हुआ, इस मायने में लोककथा का उद्‌भव उतना ही प्राचीन है जितना कि मनुष्य का जीवन ।"[८] लोकगीत, लोकनृत्य के अतिरिक्त लोककथाएँ भी आदिवासी समाज सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों की संवाहक है । हिन्दी के आदिवासी जीवन संबंधी उपन्यास साहित्य में आदिवासी समाज की विविध लोककथाओं का प्रयोग मिलता है । गोंड आदिवासियों का विश्वास है कि जादु टोना उसकी विरासत है और पृथ्वी पर इस विधा को लाने का श्रेय गोंड लोगों को ही है । पृथ्वी पर जादू-टोना लाने के संबंध में "जंगल के फूल' उपन्यास में एक मुंडा की माँ एक लोककथा सुनाती है, "हमारा देवता नंदराज जादूटोनों का स्वामी है । दुनिया भर की सारी तांत्रिक विद्याएँ उसे आती है । एक दिन सारे के सारे देवता नंदराज गुरु के पास जादू सीखने गये । तब हमारे इसी गाँव का एक चेलिक उसी जंगल में जड खोज रहा था । उसने अजानी जगहों

से कुछ अवाजें सुनी । उसके चारों ओर देखा । उसे आवाज तो बराबर सुनाई दे रही थी, पर कही कोई दिखाई नही देता था । वह रोज ये आवाजे सुनता रहा ।"९ कहते है, नंदराज गुरु अपने चेलों को जादू इसी जंगल में सिखाया करते थे ।

इस प्रकार गोंड आदिवासियों में लोककथाएँ, जादू - टोना, शकुन अपशकुन आदि प्रचलित है । मंदिर में देवी देवताओं की प्रतिष्ठा के संबंध में भी अनेक लोककथएँ प्रचलित है । 'जंगल के फूल' में सारे आदिवासियों के सबसे बडे धार्मिक केंद्र दंतेवाडा में स्थित दंतेश्वरी देवी के मंदिर के संबंध मे भी एक लोककथा प्रचलित है, जिसे सुलकसाए तिलो का और पांडू को सुनाता है । देवी का उद्धार कर उसे प्रतिष्ठत करने पर देवी के अनुग्रह की कहानी सर्वत्र प्रचलित है ।

इस प्रकार हम कह सकते है कि लोकगीत, लोकनृत्य और लोककथाएँ सिर्फ आदिवासियों में ही नही बल्कि सभी भारतीय समाज में प्राचीन समय से ही प्रचलित और प्रसिद्ध है ।

संदर्भ संकेत :-

१) मध्यकालीन हिंदी काव्य में भारतीय संस्कृति - डॉ. मदन गोपाल पृ.सं. ०१
२) लोक साहित्य का सामाजिक तथा सांस्कृतिक अध्ययन - डॉ. शर्मा
३) जंगल जहाँ शुरु होता है - संजीव पृ.सं. १४२
४) हमारे तीज त्योहार और उत्सव - प्रकाश नारायण नटाणी पृ.सं. ५-६
५) जंगल के फूल - राजेंद्र अवस्थी पृ.सं. १९२
६) जंगल जहाँ शुरु होता है - संजीव पृ.सं. १२८
७) जंगल के फूल - राजेंद्र अवस्थी पृ.सं. १११
९) जंगल के फूल - राजेंद्र अवस्थी पृ.सं. ३८